

भारत सरकार
इस्पात मंत्रालय
लोक सभा
अतारांकित प्रश्न संख्या 5356
05 अप्रैल, 2023 को उत्तर के लिए

सेल की इकाइयाँ

5356. श्री जी.एम. सिद्धेश्वर:

क्या इस्पात मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

- (क) सरकार के विजन-2030 के अगले चरण में स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड (सेल) के आधुनिकीकरण के लिए निर्धारित इकाइयों का ब्यौरा क्या है;
- (ख) हॉट मेटल, कूड स्टील और बिक्री योग्य इस्पात के संदर्भ में सेल की प्रत्येक इकाई की वर्तमान उत्पादन क्षमता कितनी है और चालू नौ महीनों की अवधि के दौरान प्रतिशत के संदर्भ में उत्पादन क्षमता कितनी रही;
- (ग) प्रस्तावित आधुनिकीकरण के बाद सेल की प्रत्येक इकाई की अनुमानित उत्पादन क्षमता का ब्यौरा क्या है; और
- (घ) सेल की प्रत्येक इकाई के आधुनिकीकरण के अंतिम दौर में कितना विलंब हुआ और सेल को उस पर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष कितना वित्तीय घाटा हुआ?

उत्तर

इस्पात राज्य मंत्री

(श्री फगन सिंह कुलस्ते)

(क): राष्ट्रीय इस्पात नीति (एनएसपी), 2017 के अनुसार 300 एमटीपीए इस्पात उत्पादन क्षमता के लक्ष्य के अनुसरण में, सेल संयंत्रों नामतः दुर्गापुर इस्पात संयंत्र, राउरकेला इस्पात संयंत्र, बोकारो इस्पात संयंत्र और इस्को इस्पात संयंत्रों में कूड इस्पात की उत्पादन क्षमता में वृद्धि करने के लिए विस्तारण के प्रथम चरण में अनंतिम योजना तैयार की गई है। तथापि, विस्तारण निम्नलिखित के अध्यक्षीन है:

- (i) इस क्षेत्र में इस्पात उत्पादन के संवर्धित स्तर की खपत करने के लिए तैयार इस्पात की माँग में वृद्धि
- (ii) स्थायी ऋण : इक्विटी अनुपात के साथ पूँजीगत व्यय को वित्तपोषित करने के लिए संसाधन की उपलब्धता
- (iii) बड़ी हुई क्षमता को बनाए रखने के लिए कैप्टिव लौह अयस्क स्रोत

(ख): वर्तमान नौ माह की अवधि के दौरान, हॉट मेटल, कूड इस्पात और बिक्री योग्य इस्पात तथा उत्पादन क्षमता की सीमा के संदर्भ में सेल के संयंत्रों की वर्तमान उत्पादन क्षमता प्रतिशतता के रूप में निम्नानुसार है:

इकाई: हजार टन

संयंत्र	हॉट मेटल		कूड इस्पात		बिक्री योग्य इस्पात	
	वार्षिक प्रचालन क्षमता	अप्रैल-दिसंबर, 2022 के लिए % क्षमता उपयोग (यथानुपात आधार पर)	वार्षिक प्रचालन क्षमता	अप्रैल-दिसंबर, 2022 के लिए % क्षमता उपयोग (यथानुपात आधार पर)	वार्षिक प्रचालन क्षमता	अप्रैल-दिसंबर, 2022 के लिए % क्षमता उपयोग (यथानुपात आधार पर)
भिलाई इस्पात संयंत्र	6450	80%	6000	82%	5400	84%
दुर्गापुर इस्पात संयंत्र	2450	103%	2200	102%	2120	101%
राउरकेला इस्पात संयंत्र	4000	107%	3800	106%	3520	106%
बोकारो इस्पात संयंत्र	4700	93%	4600	86%	4180	89%
इस्को इस्पात संयंत्र	2700	93%	2500	94%	2390	94%
विशेष इस्पात संयंत्र	0	-	410	56%	520	51%
सेल	20300	93%	19510	91%	18130	92%

(ग): वर्ष 2030-31 तक सेल की कच्चे इस्पात उत्पादन की प्रचालन क्षमता को मौजूदा 19.51 एमटीपीए से लगभग 35.65 एमटीपीए तक अनंतिम रूप से बढ़ाने की परिकल्पना की गई है। वर्ष 2030-31 तक सेल की कूड इस्पात क्षमता का परिकल्पित संयंत्र-वार विवरण निम्नानुसार है:

इस्पात संयंत्र	प्रचालनगत कूड इस्पात क्षमता (एमटीपीए)	परिकल्पित कूड इस्पात क्षमता (एमटीपीए)
भिलाई इस्पात संयंत्र	6.00	6.80
दुर्गापुर इस्पात संयंत्र	2.20	4.73
राउरकेला इस्पात संयंत्र	3.80	9.70
बोकारो इस्पात संयंत्र	4.60	7.03
इस्को इस्पात संयंत्र	2.50	6.98
अलॉय इस्पात संयंत्र	0.23	0.23
सेलम इस्पात संयंत्र	0.18	0.18
सेल	19.51	35.65

परिकल्पित कूड इस्पात क्षमता डीपीआर को अंतिम रूप देने के अध्यक्षीन है और इसके अलावा, उपरोक्त के अनुसार, विस्तार योजना का निष्पादन भाग (क) में उल्लिखित शर्तों के अध्यक्षीन है।

(घ): स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड (सेल) द्वारा भिलाई (छत्तीसगढ़), बोकारो (झारखंड), राउरकेला (ओडिशा), दुर्गापुर (पश्चिम बंगाल) और बर्नपुर (पश्चिम बंगाल) में अपने पाँच एकीकृत इस्पात संयंत्रों और सेलम (तमिलनाडु) में एक विशेष इस्पात संयंत्र में शुरू किए गए आधुनिकीकरण और विस्तार (एमईपी) को जून, 2018 तक उत्तरोत्तर रूप से पूरा कर लिया गया है। इकाई-वार वास्तविक समापन के साथ-साथ समापन की समयावधि पूरा होने का विवरण नीचे दिया गया है:

संयंत्र/इकाई	समापन की समयावधि	वास्तविक समापन	मूल लागत (निवल सेनवेट) (करोड़ रु.)	संशोधित लागत (निवल सेनवेट) (करोड़ रु.)
भिलाई इस्पात संयंत्र	मार्च'2013	जून'2018	17,266	22,566
राउरकेला इस्पात संयंत्र	मार्च'2013	दिसंबर'2014	11,812	13,307
दुर्गापुर इस्पात संयंत्र	दिसंबर'2012	जून'2015	2,875	3,169
बोकारो इस्पात संयंत्र	दिसंबर'2011	सितंबर'2015	6,325	7,179
इस्को इस्पात संयंत्र	दिसंबर'2010	दिसंबर'2014	16,408	19,235
सेलम इस्पात संयंत्र	मार्च'2010	सितंबर'2010	1,902	2,371

यह मुख्यतः कार्य की प्रकृति के कारण था, जिसमें कई एजेंसियों की सहभागिता, मौजूदा संयंत्रों में नई प्रौद्योगिकी के पुनः संयोजन की चुनौती, संसाधन की कमी आदि अपरिहार्य थे।
